IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, August 2022
Impact Factor: 6.252

आदिवासी साहित्य का उद्भव एवं विकास

पूजा चौधरी[1] and डॉ. अमित शुक्ला[2]
शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
प्राध्यापक (हिन्दी), शास. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)[2]

शोध–सारांश :–

माना जाता है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज के रूप में इनका इतिहास छोटे–छोटे भागों से प्रारम्भ होता है। इन लघु समाजों को प्रकृति के विभिन्न तत्वों एवं वन में विचरण करने वाले अन्य प्राणियों से मात्र अस्तित्व के लिए कठीन संघर्ष एक लम्बे समय से गुजरना पड़ा इस संघर्ष के अनुभव के आधार पर उसने उच्चतर कुशलता प्राप्त किया। उसने अपनी संगठनात्मक शक्ति का धीरे–धीरे उपयोग किया। मानव समाज की जनसंख्या तत्कालीन संसाधनों के आधार पर सुगमता से भरण–पोषण की सीमा की तुलना में सतत् रूप से बढ़ती रही और मनुष्य के ऐतिहासिक विकासक्रम में उस समय एक नया समय आया जब विभिन्न आदिवासी समाज सीमित साधनों पर विकास के लिए एक–दूसरे स्पर्धा करने लगे। यह यह प्रतिस्पर्धा और संघर्ष हजारों वर्षों तक चलता रहा है। इस दौर में जन समूहों का अनेक दिशाओं में गमन होता रहा। दुनिया के कई भागों में जनजातीय समूहों का धीरे–धीरे नदियों की समतल घाटितयों में बसने लगी और वहीं पर स्थायी कृषि का विकास हुआ। इन्हीं बिन्दुओं को शोध – पत्र में समाहित करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द :– आदिवासी, साहित्य, इतिहास, संगठनात्मक, विकासक्रम, जनजातीय, प्रतिस्पर्धा आदि।

संदर्भ स्रोत :

[1]. प्रीत सागर जन समूह और जनजातियां अंतर्गत रोजगार समाचार नई दिल्ली 1993, पृ. 01
[2]. धुरिये जी.एस. एबारिजनल, सो काल्ड एण्ड देयर फ्युचर बानबे पोपुलर प्रकाशन 1943 धुरिये ने इस शीर्षक से पुस्तक को 1943 में लिखा था बाद में संस्करण में इनका शीर्षक अनुसूचित जनजातियां रखा।
[3]. दोषी, शम्भूलाल, उच्च सामाजिक मानव विज्ञान दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड 1978, पृ. 218–219
[4]. उप्रेती हरिश्चंद भारतीय जनजातियां जयपुर, सामाजिक विज्ञान हिन्दी रचना केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, 1970 पृ. 01
[5]. रायवर्मन, बी.के. एवं एच.एल. हरि ए प्रीलिमिनरी एप्रेजल ऑफ दि शेड्यूल्ड ट्राइब्स ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, ऑफिस ऑफ दि रजिस्टार जेनरल, इण्डिया, 1971 पृ. 02

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, August 2022
Impact Factor: 6.252

[6]. ओनियन्स सी.टी. दि शर्टर आक्सकोर्द इंग्लिश डिक्शनरी वाल्यूम–2 लंदन, आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस 1970, पृ. 243

[7]. मदन एस एन सोशल ऐन्थ्रो पोलोजी नई दिल्ली, अनमोल पब्लिकेशन 1989, पृ. 316

[8]. लेविस आई.एम.सोशल ऐन्थ्रोलॉजिकल इन पर्सपेक्तिव ग्रेट बिटेन यूनिवर्सिटी प्रेस केम्ब्रिज,पृ.13

[9]. तिवारी, शिवकुमार मध्यप्रदेश के आदिवासी भोपाल, मध्यप्रदेश, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पृ. 02

[10]. प्रीति सागर जनसमूह और जनजातियां अंतर्गत रोजगार समाचार खण्ड–17, अंक पृष्ठ 51, 20, 26 मार्च हिन्दी साप्ताहिक देवेन्द्र भारद्वाज मुख्य संपादन नई दिल्ली, ईस्ट ब्लाक लेवल 7–आर के पुरम 1993, पृ. 02